प्रदर्शनी के चित्र दिन प्रति दिन और भी इम्प्रूव होते जावेंगे। बाबा ने जो अभी बनाया है गीता का भगवान कौन? यह सबसे जरूरी चित्र है। मनुष्य समझेंगे गीता का भगवान कृष्ण नही, परमात्मा शिव है। उनको ही ओ गाड फादर कह कर याद करते है। सारा मदार ही इस चित्र पर है। विनाश काले प्रीत बुधी और विनाश काले विप्रीत बुधी। किसके साथ? शिव परमात्मा के साथ प्रीत बुधि विजयन्ति, कृष्ण के साथ प्रीत बुधी विनशयन्ति। यह तो यथार्थ बात है। यह चित्र बहुत जरूरी है। पहले-2 सभी के पास यह चित्र हो। प्रदर्शनी तो करते है ना। दिन प्रति दिन नये-2 विचार निकलते रहेंगे। यह नालेज सबके लिये है। गीता ही मुख्य शास्त्र है भारत के प्राचीन ज्ञान और योग का। उस कृष्ण वाली गीता से तो आयु ही घट गई है। कितने गपोड़े बैठ लिखे है। बाप कहते है तुमने बहुत वेस्ट टाइम किया है भक्ति मार्ग में शुरू से पिछाडी। और कितना खर्चा भी किया है। सर्विस वालो का ही विचार सागर मथन होता है। सर्विस पर ही नही है तो विचार सागर भी मथन नही होता है। इसमें आत्म-अभिमानी बहुत चाहिये। तुम ब्राह्मण भी सर्विस नही करेंगे तो मिलेगा ही क्या। राजधानी स्थापन होती है फिर उसमे तो दास-दासियाँ भी तो चाहिये ना। वो सब बन रहे है। पिछाडी में तुम सब समझ जावेंगे कि यह-2 क्या-2 बनेंगे। कोई विचारे है मरने पर हुई बाबा से पूछते है बाबा हम क्या बनेंगे? तो बाबा झट बता देंगे। बाप के बने है तो कहना चाहिये बाबा हम मनसा वाचा कर्मणा आप की सर्विस में लगेंगे। वो नही करते है अपनी ही सिर्फ सर्विस करने में लग जाते है तो वो विचारे क्या पद पावेंगे। नम्बरवार पद तो होगा ना। भण्डारी अच्छी सम्भालने वाली हो तो, वहाँ भी तो भण्डारी नम्बरवार होंगे ना। कोई तो ऊपर से मुखी होगा उनके नीचे फिर 8, 10 और होंगे। बाबा जानते है कि सीखने वाले सिखाने वाले से भी ऊँच चले जाते है। सर्विस करने वाले दिल पर चढ़े रहते है। लौकिक बाप के दिल पर भी आज्ञाकारी बच्चे ही चढ़ते है। जिनमें ज्ञान नही है उनमें से जैसे कि बांस आती है, नफरत आती है। कोई भी विकर्म करते है, पतित बन जाते है तो दिल को अन्दर में बहुत खावेगा। ऐसा बहुत होता रहता है। माला में पिरोये जाना कोई मासी जी का घर नही है। देही-

****

अभिमानी बन ही नही सकते है बहुत फेल होते रहते है। विश्व का मालिक बनना कोई कम पद है क्या। पूरी चढ़ती कला तो तब कहेंगे जब कि पूरी विजय माला में आ जावे। हर एक खुद ही समझ सकते है कि मैं कितनी सर्विस करता हूँ। प्रदर्शनी में बहुतो से बोलना भी होता है। सब कोई बच्चे थोड़ेई है।

*** **** **** **************************

आगे चल कर बहुत होशियार होते जावेंगे। यह है बहुत ऊँच ते ऊँच कुल। वो है शुद्र। तो हम ब्राह्मण ब्राह्मणी बनने से तुम स्वर्ग के वासी बन सकते हो। आगे चल कर तुम देखेंगे कि कितने आते है। ऋषी मुनी भी आवेंगे। बाबा जो यह बना रहे है चित्र (गीता का भगवान कौन?) वो बहुत बड़े-2 अक्षरों में ट्रान्सलाइट में भी बनावेंगे। दिन प्रति दिन नई-2 प्वाइन्टस निकलती रहेंगी। समझा जाता है इस तरह तो सब शास्त्र दुर्गति में ले जाने वाले है। शिव बाबा जो अब बना रहे है इनसे सदगति होनी होनी है। दुर्गति का अब विनाश सामने खड़ा है। विनाश कब होगा यह नही बता सकते है। बुधी से समझा जाता है। यह सुनाना ड्रामा में नही है। बाकी हाँ जल्दी होगा। इसके लिये जल्दी-2 पुरूषार्थ करना है। अब अगर शरीर छूट जावे तो छोटा बच्चा जाकर बनेंगे। फिर तो इतना पुरूषार्थ कर नही सकेंगे। छोटेपन में अक्ल इतने तीखे नही होते है। 10, 11, वर्ष में बुधी तेज होती है। योग की यात्रा में तो बहुत बहुत कच्चे है। इसलिये देहअभिमानी होने से विकर्म बहुत होते है। माया माथा मूँड लेती है जो कि पता भी नही पड़ता है। माया भी ऐसी है जैसे कि चूहा काटता है तो पता भी नही पड़ता है। बहुतो को कुछ भी पता नही पड़ता है। उनसे तो अज्ञानी बड़े अच्छे और रायल होते है। बड़े आज्ञाकारी भी होते है। और